॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत २०७५ • वर्ष : २ • अंक : ३ • फरवरी २०१९

ब्राह्मी लिपि – इतिहास का प्रवेशद्वार

डॉ. अभिजित दांडेकर (सहायक प्राध्यापक, पुरातत्त्व विभाग, डेक्कन कॉलेज, पुणे)

डॉ. अभिजित दांडेकर

सन् १७८४ में विलियम जोन्स एवं चार्ल्स् विल्किम द्वारा 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' नामक संस्था की बंगाल में स्थापना की। इसी कालावधि (१७८९-१८००) में कालीदास के 'शाकुंतल' का विलियम चार्ल्स् द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। इसके पश्चात् मनुस्मृति, गीता आदि के अनुवाद भी हुए। पाश्चात्य बुद्धिजीवी वर्ग इन बातों के लिए क्यों उत्सुक हुआ इसके पीछे उनके बडे आशय थे। वे यह जानना चाहते थे कि राजकीय दृष्टि से इस देश की पूर्वकालीन स्थितियाँ कैसी थी? यहाँ की संस्कृति की जडें क्या है? उन्हें यह तो आभास हो चुका था कि सांस्कृतिक समृद्धि ही इस देश की बडी ताकत है इसलिए इस शक्तितत्त्व के संग रहकर यहाँ राज कर पाना तब तक कठिन है जब तक इसके प्राचीन इतिहास को समझा नहीं जाता। इसी अवधारणा के साथ भारत की प्राचीन ब्राह्मी लिपि की परिचय यात्रा भी शुरु हुई।

हमारे लिए भी जरुरी है कि ब्राह्मी लिपि के अभ्यास की शुरुआत करने से पहले इसके गतिमान इतिहास से जुडे प्रत्येक पडाव को समझने की प्रथम आवश्यकता है। सम्राट अशोक के लेख और सम्राट अशोक का परिचय तब तक संभव नहीं हो पाया जब तक ब्राह्मी लिपि को नहीं समझा जा सका।

अशोक ने अपने लेख में **देवानं पिय पियदसी राजा** ऐसा उल्लेख किया है। यह **पियदसी राजा** कौन था? इस उत्तर की तलाश हमें श्रीलंका ले गई। वहां महावंश का (ई.स.१५३२-३६) अनुवाद हुआ था उसी में धर्मसुख, बिन्दुसार और चन्द्रगुप्त मौर्य के उल्लेख भी मिलें। महावंश के विषय संदर्भो द्वारा अशोक और श्रीलंकन राजा के मैत्रीसूत्रों से पता चला कि **पियदसी राजा** अशोक ही है। फिर क्रमशः अनेक शिलालेखों पर अनेक दृष्टियां पडती गई। जिस तरह ये शिलालेख भिन्न भिन्न स्थानों पर हैं, उसी तरह इनकी लिपियों में भी भिन्नताएं नजर आयी। लिपियों के साथ प्रदेशानुसार वहां की प्राकृत भाषाएं भी परिवर्तित दिखी। संभवतः इन भिन्नताओं का कारण राजा की यह इच्छा रही होगी कि, प्रत्येक प्रांत की प्रजा की रूढ भाषा का प्रभाव उन लेखों में रहें, ताकि जनसंवाद सहज हो पाये। राजसंस्था और प्रजा के संवाद में अंतर न रहे, इसी आशय से अशोक के शिलालेखों में प्रादेशिक भिन्नताएं दिखाई देती है।

पूर्वकालीन शिलालेखों की लिपि और भाषा के इस व्यामिश्र को भी नजर में रखकर हमें अभ्यास करना होगा। ब्राह्मी लिपि इस अभ्यास का एक झरोखा है, एक दरवाजा है, जिसे पार करने के बाद इतिहास के विशाल दालन में प्रवेश संभव है। दूसरे शब्दों में पूर्वकालीन इतिहास के सत्यापन के लिए ब्राह्मी लिपि एक जरुरी माध्यम है। इस तरह एक बार ब्राह्मी लिपि के अभ्यास की प्रविणता हांसिल कर ली तो, और भी अनेक ऐतिहासिक सूत्र उजागर होने लगेंगे।

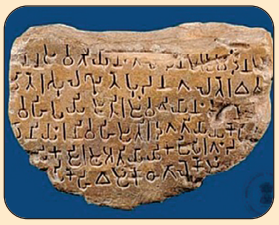

महास्थान शिलालेख, बांग्लादेश

ब्राह्मी एक प्रवाहमान साधारण शब्द है। आपने अशोक की जिस ब्राह्मी से परिचय किया है, वह उस काल की ब्राह्मी की प्रारंभिकता है। कुछ लोग **महास्थान** के शिलालेखों एवं गोरखपुर के समीप **सोहगौरा** के ताम्रपट की लिपि में अशोक पूर्व के लक्षण देखते हैं। जेम्स प्रिंसेप ने इस लिपिभेद को देखने के बाद कहा कि यह भाषा संस्कृत तो नहीं है, बल्कि प्राकृत है। इसका कारण उसे पता था कि संस्कृत में संयुक्ताक्षर होते हैं और प्राकृत में नहीं होते हैं। इस अवधारणा से उसने प्राकृत के अनुशीलन से ब्राह्मी को जोडकर समझा।

सोहगौरा ताम्रपट, उत्तरप्रदेश

कालांतर में जब कुषाणकाल में संस्कृत लेखन की जरूरत आयी, तब तक यह भाषा श्रुत-श्रवण विधा के रूप में अधिक रूढ रही। उस काल में संस्कृत शिलालेखों में अवतरित नहीं हो पायी थी, ऐसे समय में ब्राह्मी लिपि ने स्वयं को परिवर्तित कर लिया, अर्थात् उस काल के संशोधकों, विद्वानों और अभ्यासकों ने ब्राह्मी लिपि को परिष्कृत किया।

भारतीयों की विशेषता यह है कि, हम सदा नये परिवर्तनों को स्वीकार करते आये हैं। उसी का परिणाम है कि, जिस काल में, जिस समाज को, जो प्रस्तुत(Relevant) था, वैसा प्रस्तुतीकरण होता रहा। ब्राह्मी लिपि के संदर्भ में भी यही हुआ। शिलालेखों से कागज पर आयी ब्राह्मी के लिए जो परिवर्तन आवश्यक थे, वे सारे स्वीकार्य हुए। इसके विपरीत खरोष्ठी ऐसे बदलावों से

विमुख रही और अस्त हो गई। चौथी शताब्दी में खरोष्टी लिपि प्राकृत लिखने के लिए सयुक्तिक थी, लेकिन उसे संस्कृत में लिखना कठिन था। जैसे ही संस्कृत का वर्चस्व बढा, खरोष्टी का समापन होने लगा। तात्पर्य यह है कि, ब्राह्मी लिपि के विकास का प्रत्येक पडाव उसके लचिलेपन से जुडा है। अशोककालीन ब्राह्मी और वर्तमान देवनागरी के बीच की सुसंगत शृंखला को ब्राह्मी लिपि के विकासयात्रा का मौलिक राजपथ कहा जा सकता है।

इस तरह उपरोक्त तथ्यों के वैचारिक आधार को ब्राह्मी लिपि के सर्वांगीण अभ्यास का सहायक मानना चाहिए। प्राचीन समाजव्यवस्था, लिंगभेद आदि के भी ब्राह्मी लिपि के अभ्यास द्वारा साफ-साफ देखा जा सकता है। ब्राह्मी लिपि के अभ्यास के लिए आज हमें प्राप्त सभी साधनों का उपयोग करना है। अधिकतर लोगों के पास लिपिज्ञान है लेकिन भाषाज्ञान नहीं। आपके पास बडी उपलब्धि यह है कि, संस्कृत और प्राकृत का ज्ञान साधन के रूप में हांसिल है। बडी बात यह है कि, लिपि तो आखिर भाषा का माध्यम है, लिपि दूसरी श्रेणी में है। भाषा ज्ञान का सजीव रूप है। भाषा की समृद्धता नहीं है तो मात्र लिपि सिखने से कुछ साध्य नहीं होगा।

अंततः हम यह निष्कर्ष तैयार करें कि, ऐतिहासिक संशोधनों के प्रमाणों को तलाशने के लिए ब्राह्मी लिपि जरुर आवश्यक है, मगर उसके वेग की निरन्तरता उसके वैविध्य का इतिहास समझना भी जरुरी है। तब ही ब्राह्मी का परिपूर्ण अभ्यास संपन्न होगा और इस कार्यशाला का अंतिम और सुन्दर साध्य भी।

(मूल मराठी व्याख्यान का संक्षिप्त हिंदी स्वरूप - ओमजी ओसवाल)

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला

(श्रुतभवन तथा पुणे विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में ०६ से ०८ डिसेंबर २०१८ तक आयोजित त्रिदिवसीय ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का वृत्तांत)

डॉ. किरणकुमार थपलियाल

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का पहला सत्र २९ से ३१ अगस्त २०१८ में आयोजित किया था। इस कार्यशाला में सहभाग लेने के लिए लगभग १२० लोगों ने इच्छा दर्शायी थी । लेकिन उसमें से ४५ लोगों का चयन किया गया था। बाकी लोंगों की सीखने की इच्छा के कारण ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण प्रगत कार्यशाला के दुसरे सत्र का आयोजन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन सूर्यदत्ता इन्स्टिट्युट के संस्थापक **डॉ. संजय चोरडियाजी** ने किया। इस प्रसंग पर विद्यापीठ के तत्त्वज्ञान विभाग के प्रमुख **प्रा.डॉ.रवींद्र मुळे**, डेक्कन कॉलेज पुरातत्त्व विभाग के सहायक प्राध्यापक **डॉ. अभिजित दांडेकर**, ब्राह्मी लिपि विशेषज्ञ तथा बनारस विश्वविद्यालय के **प्रा. डॉ. किरणकुमार थपलियाल**, तत्त्वज्ञान विभाग के प्रा. टंडन, जैन अध्यासन की प्रमुखा **डॉ. विमल अनिल बाफना**, श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के सचिव **राजेंद्र बांठिया** एवं **ललित गुंदेचा** आदि मान्यवर उपस्थित थे।

इस कार्यशाला में डॉक्टर, इंजिनियर, पुरातत्त्व विभाग, इतिहास आदि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों से सहभागी उपस्थित थे। तीन दिन की कार्यशाला में ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला की शिक्षा, विभिन्न पद्धति से अभ्यास एवं ब्राह्मी

ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला अतिथि

लिपि में लिखित सम्राट अशोक के शिलालेख का वाचन कराया। इस कार्यशाला में **डॉ. अभिजित दांडेकरजी** ने बीजभाषण किया। **डॉ. जितेंद्र बी. शाहजी** का **ब्राह्मी लिपि की शोधयात्रा** इस विषय पर व्याख्यान का भी आयोजन किया था। **प्रा. डॉ. किरणकुमार थपलियाल जी** ने तीनों दिन विभिन्न पद्धति से ब्राह्मी लिपि और उसका इतिहास पढाया।

कार्यशाला के समापन एवं प्रमाणपत्र वितरण के लिए प्रा.डॉ.रवींद्र मुळे, **प्रा. डॉ. किरणकुमार थपलियाल**, श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के उपाध्यक्ष **भरतभाई शाह** तथा कोषाध्यक्ष **मनोजभाई शाह** आदि उपस्थित थे।

श्रुतभवन में हस्तलिखित ग्रंथों के शुद्धिकरण का मूल्यवान कार्य हो रहा है। बहुत कम लोग इस प्रकार के काम करते है। **आनेवाली पीढी के लिए प्राचीन ज्ञान की विरासत का जतन करना, उसका शुद्धिकरण करना और उसे आत्मसात करना आज के समय की मांग है।** प्राकृत-संस्कृत भाषा, ब्राह्मी इ. लिपि का महत्त्व इसकी फिलोसोफी का अध्ययन करना यह शैक्षणिक क्षेत्र का बडा आंदोलन है। इस प्रकार के उपक्रम को सूर्यदत्ता फाउंडेशन का हमेशा सपोर्ट रहेगा।

- डॉ. संजय चोरडिया, संस्थापक-अध्यक्ष, सूर्यदत्ता इंस्टिट्युट

जब शुरुआत हुई तो सब बुजुर्ग लोगों को, हमसे जादा पढे लिखे लोगों को यहाँ देखकर थोडासा डर लग रहा था कि सिर्फ इतिहास के आधारपर ब्राह्मी क्या समज में आएगी? लेकिन डॉ. थपलियाल सर ने उत्साह के साथ और अच्छे तरीके से हमें सिखाया जिससे हमारा सारा डर भाग गया। सर ने हमें इतिहास की तरफ आगे बढने के लिए पहला दरवाजा तो खोलकर दे दिया है । दूसरा दरवाजा खुद खोलने की शक्ति भी उन्होंने दी है।

- ओशिन बंब (प्रशिक्षणार्थी)

कार्यविवरण

- शास्त्र संशोधन प्रकल्प के अंतर्गत **लोकप्रकाश, श्रेयांसजिनचरित, अनेकार्थध्वनिमंजरी, वासवदत्ता आख्यायिका वृत्ति, जिनशतक टीका, तर्कभाषाचन्द्रिका, वनस्पतिसप्ततिका** का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।
- वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प के अंतर्गत आ. श्री **मुनिचंद्रसूरीश्वरजी** म.सा, सा. श्री **प्रशमिताश्रीजी** शिष्या सा.श्री **संयमप्रज्ञाश्रीजी** म.सा., आ.श्री **श्रीचंद्रसूरीश्वरजी** म.सा., **हिरेनभाई दोशी, उमंगभाई शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

समाचार

- पूज्य पितृगुरुदेव मुनिराज श्री **संवेगरतिविजयजी** म.सा. लिवर एवं स्पाइन की चिकित्सा हेतु पुणे हॉस्पिटल में है। मुनिप्रवर श्री **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. विदर्भ में विहार कर रहे है। सा.श्री. **जिनरत्नाश्रीजी** म. की निश्रा में तीन संपादित पुस्तकों का संघार्पण हुआ एवं झगडिया तीर्थ की चैत्यपरिपाटी नीकली। अभी वे दक्षिण गुजरात में विहार कर रहे है।
- दि. २७-११-२०१८ के दिन **प्रो. अलरिच क्रॅग** (डेन्मार्क) ने श्रुतभवन की मुलाकात की। उन्होंने शास्त्र संपादन हेतु अनुदान भी दिया।
- पूज्य गुरुदेव की निश्रा में १३-१२-२०१८ को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय ट्रस्ट मानाजी किसनाजी धडा के नवनिर्मित जिनालय में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु का गर्भगृह प्रवेश संपन्न हुआ।
- दि. २३-१२-२०१८ के दिन **कालिंद्री जैन समाज** के स्नेहमिलन में **ओमजी ओसवाल** ने श्रुतभवन की गतिविधियों का परिचय दिया।
- दि. २-०१- २०१९ के दिन **सौ. गुणमाला ओमजी ओसवाल** के १०८ पार्श्वनाथ अट्ठम तप की पूर्णाहूति प्रसंग पर सपरिवार श्रुतभवन में पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया।

विविध स्थलों में लेख प्रस्तुति एवं कार्यशाला में सहभाग

विषय	प्रस्तुति	स्थल	दिनांक
अनेकांत : विश्वशांति का मूलाधार	पू.ग. श्री वैराग्यरतिवि. म. (श्री अमित उपाध्ये)	तीर्थंकर महावीर विद्यामंदिर, पालीताणा	२५ जनवरी २०१९
अनेक हस्तलिखितों के एक लेखक	डॉ. विनया क्षीरसागर	CASS पुणे विद्यापीठ	१०-१२ जनवरी २०१९
हस्तलिखितों का कालनिर्धारण	श्री कृष्णा माळी	CASS पुणे विद्यापीठ	१०-१२ जनवरी २०१९
ग्रंथलिपि : परिचय एवं अभ्यास	श्री अमित उपाध्ये श्री कृष्णा माळी	डेक्कन कॉलेज, पुणे	२,३,५ फरवरी २०१९
लिपिकार एवं लेखन सामग्री	श्री कृष्णा माळी	डेक्कन कॉलेज, पुणे	३ फरवरी २०१९
जैन देवनागरी लिपि की विशेषता	पू.ग.श्री वैराग्यरतिवि. म.	श्रुतभवन	४ फरवरी २०१९
विविध हस्तलिखित : आयुर्वेद के संदर्भ में	डॉ. विनया क्षीरसागर	डेक्कन कॉलेज, पुणे	१२ फरवरी २०१९
हस्तलिखितों का समीक्षात्मक संपादन	डॉ. विनया क्षीरसागर	डेक्कन कॉलेज, पुणे	१३ फरवरी २०१९
एकमात्र हस्तलिखित से कृति संपादन	श्री अमोघ प्रभुदेसाई	डेक्कन कॉलेज, पुणे	१४ फरवरी २०१९
अभिजात साहित्य का संपादन	श्री अमोघ प्रभुदेसाई	डेक्कन कॉलेज, पुणे	१६ फरवरी २०१९
प्राचीन देवनागरी लिपि का अभिवाचन	श्री अमित उपाध्ये	डेक्कन कॉलेज, पुणे	१७ फरवरी २०१९

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- श्री माणेकचंद नेमचंद शेठ चॅरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई।
- श्रीमती ज्योतिबेन नलिनभाई जीवतलाल दलाल परिवार।
- पू. आ. श्री **रत्नसुंदरसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री सरदारबाग श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, सरदारबाग, बारडोली, सुरत।
- पू.आ. श्री **रत्नचंद्रसूरिजी** म.सा की प्रेरणा से श्री गोडी पार्श्वनाथजी टेंपल ट्रस्ट, गुरुवार पेठ, पुना।
- आ. श्री **रत्नसेनसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री सुमतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, म्हैसुर।
- पू.सा.श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री अंकलेश्वर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अंकलेश्वर।
- पू. सा.श्री **तत्त्वरक्षिताश्रीजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री सीमंधर शांतिसूरि श्राविका संघ, व्ही.व्ही.पुरम्, बेंगलोर।
- पू.पं.श्री **मोक्षरति-तत्त्वदर्शनवि**.ग. की प्रेरणा से श्री अलकापुरी जैन श्वेतांबर मुर्तिपूजक संघ, वडोदरा।
- श्रीमती कल्पनाबेन एवं सुधीरभाई एस. कापडिया परिवार, मुंबई।
- श्री मरचन्ट सोसायटी जैन संघ, अहमदाबाद
- पू. मु. श्री **आत्म-हितरतिविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री संभवनाथ महाराज ट्रस्ट, कराड।
- वीरविभु के ७९ वे पट्टधर गच्छाधिपति पू. आ. श्री **हेमभूषणसूरिजी** म.सा. की पुण्यस्मृति में संघवी वीरचंद हुकमाजी आयोजित चातुर्मास समिति, पालीताणा।
- गच्छाधिपति पू. आ. श्री **महोदयसूरिजी** म.सा. के अनन्य पट्टधर गच्छाधिपति पू. आ. श्री **हेमभूषणसूरिजी** म.सा. की पुण्यस्मृति में संघवी वीरचंद हुकमाजी परिवार आयोजित चातुर्मास समिति, पालीताणा।
- श्री गोवालिया टैंक जैन संघ, मुंबई।
- श्री मरीन ड्राईव्ह जैन आराधक ट्रस्ट, मुंबई।
- पू. मुनिराज श्री **शुक्लध्यानविजयजी** म.सा. के प्रेरणा से श्री रिद्धि सिद्धि आदर्श श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, मलाड, मुंबई।
- पू. आ.श्री **यशप्रेमसूरिजी** म.सा. की प्रेरणा से भाववर्धक श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अहमदाबाद।
- पू. मुनिराज श्री **पुण्यरक्षितविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री धन्ना शालिभद्र तपागच्छ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, मलाड, मुंबई।
- श्री वर्धमान स्वामी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सदाशिव पेठ, पुना।
- पू. उपाध्याय श्री **भुवनचंद्रविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से श्री कच्छ दुर्गापूर विशा ओसवाल मूर्तिपूजक जैन महाजन, मुंबई।
- पू. मुनिराज श्री **निर्मलयशविजयजी** म.सा. की प्रेरणा से, श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक गुजराती पंच, मालेगाव।
- अरिहंत वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेतांबर ट्रस्ट, सुरत।
- प्रो. अलरिच क्रॅग (डेन्मार्क)।
- श्री सिद्धार्थ रतिलाल शाह, अहमदाबाद।

प्रतिभाव

We visited the Shrutbhavan today and we extremely impressed with the high quality research work that is going on here. The registration and digitization of manuscripts is very much needed work to preserve Jainism and the making of new text edition is extremely valuable. With best wishes for your success.

- Pro. Ulrich Kragh (Denmark)

जह जह सुज्झइ सलिलं, तह तह रूवाइं पासई दिट्ठी।
इय जह जह तत्तरुई, तह तह तत्तागमो होइ।।

(आवश्यक निर्युक्ति ११६३)

जल ज्यों-ज्यों स्वच्छ होता है त्यों-त्यों द्रष्टा उसमें प्रतिबिम्बित रूपों को स्पष्टतया देखने लगता है। इसी प्रकार अन्तर में ज्यों-ज्यों तत्त्वरुचि जागृत होती है, त्यों-त्यों आत्मा तत्त्वज्ञान प्राप्त करता जाता है।

ब्राह्मी लिपि व्याख्यानमाला की डीव्हीडी भी उपलब्ध है।

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre,
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel